eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था संबंधी सामाजिक अवधारणा एवं मूल्यसंकट नई शिक्षा नीति के विशेष सन्दर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]डॉ० अरविन्द कुमार शुक्ल
[2]डॉ० अशोक कुमार पाठक

[1]सहायक प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिन्दकी, फतेहपुर (उ0प्र0)
[2]उपप्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय प्रयागराज

Received: 03 July 2021, Accepted: 15 July 2021, Published with Peer Review on line: 10 Sep 2021

Abstract

शिक्षा सर्वांगीर्ण विकास हेतु वह प्राण वायु है जो व्यक्ति को अनुशासित रहना सिखाती है, साथ ही उसे आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश कराते हुए, सत्य की खोज में लगे मानव आत्मा को प्रशिक्षित करती है, परिणांमतः व्यक्ति स्वयं के, समाज के, राष्ट्र के एवं मानवता के परिमार्जन में सकारात्मक योगदान दे पाता है। परन्तु आज यह विचारणीय विषय है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की समाज में स्थिति क्या है। इस शिक्षा का भारतीय समाज में कितना योगदान हो रहा है। वर्तमान शिक्षा प्राप्त लोगों में मूल्यो की स्तर क्या है तथा उसके लिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था कितना उत्तरदायी है तथा प्रशासन को शिक्षा निति बनाते समय किन विन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए. चूंकि शिक्षा एक प्रक्रिया है अतः इसमें कई पक्ष अपनी भूमिका अदा करते हैं, जैसे शिक्षार्थी, शिक्षक, शिक्षण विधि, शिक्षण तकनीक, शिक्षण सामाग्री/पाठ्यक्रम, समाज, परिवार एवं वातावरण आदि।

अतः प्रस्तुत अध्ययन वर्तमान शिक्षाव्यवस्था तथा उसकी उपयोगिता पर एक विश्लेषण है, जिसमें अध्ययनकर्ता ने शिक्षकों, शिक्षार्थियों, अभिभावकों, एवं समाज के लोगों के विचारो को समाहित करते हुए समझने का प्रयास किया है। अध्ययन से यह स्पष्ट है कि आज के अभिभावक एवं समाज के अन्य लोग वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न पक्षों से खुश नहीं है शिक्षा व्यवस्था में गिरते शिक्षक एवं छात्र स्तर, गैर रोजगार प्रदायी पाठ्यक्रम, देश में असमान शिक्षण प्रणाली एवं पाठ्यक्रम, अप्रायोगिक शिक्षण तकनीक, शिक्षक भर्ती में भ्रष्टाचार, अयोग्य लोगों की भर्ती, योजनाओं की असफलता एवं अव्यवस्था से आज शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है. नवनियुक्त अधिकारियों द्वारा भ्रष्टाचार, मानव मूल्यों में गिरावट एवं गिरते शिक्षक छात्र सम्बन्ध से, गिरते शैक्षिक

मूल्यों का अंदाजा लगाया जा सकता है। जरूरी है कि महात्मा गाँधी जी के विचारों को अपनाते हुए माध्यमिक स्टार तक की शिक्षा को अधिक पुष्ट, समग्र एवं रोजगार प्रदायी बनाया जाये.शिक्षा में शिक्षण विधि तकनिकी एवं शिक्षक प्रशिक्षण की रूपरेखा निर्धारित की जाये साथ ही शिक्षा प्रशासन को नयी दिशा दी जाये। आवश्यक है कि इन पक्षों पर सरकार विचार करे एवं परिमार्जन करे ताकि शिक्षा समाज निर्माण में अपनी भूमिका को प्रभावी रूप से अदा कर सके. अब समय है की शिक्षा के अधिकार के बजाय सरकार गुणवत्तापूर्ण तकनीक युक्त निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के बारे में सोचे। अब जरूरी है की शिक्षक भी ऑनलाइन शिक्षण के लिए तकनीकि रूप से संमृद्ध हो। नयी शिक्षानीति निश्चित तौर पर सरकार के सराहनीय कदम है जो शिक्षा की वर्तमान कमियों को दूर करने में प्रभावी भूमिका अदा करेंगी।

Keywords:- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था संबंधी सामाजिक अवधारणा, मूल्यसंकट, नई शिक्षा नीति के विशेष सन्दर्भ तथा उसकी उपयोगिता।

Introduction

शिक्षा मनुष्य में अंतर्निहित शक्तियों का विकास करती है, ताकि वह स्वयं का, समाज का, राष्ट्र एवं पृथ्वी का महत्वपूर्ण अंग बन सके। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति/जीव का शारीरिक, मानसिक व आत्मिक विकास एवं परिमार्जन होता है, तथा व्यक्ति पूर्णता की ओर अग्रसर होता है। शिक्षा की भूमिका मानव समाज के निर्माण में सर्वोच्च है जिसके माध्यम से ही कोई समाज या संस्कृ ति पुष्ट एवं व्यस्थित हो सकती है।

शिक्षा सर्वांगीर्ण विकास हेतु वह प्राण वायु है जो विकास की दशा एवं दिशा को निर्धारित करती है। यह व्यक्ति को अनुशासित रहना सिखाती है, साथ ही उसे आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश कराते हुए, सत्य की खोज में लगे मानव आत्मा को प्रशिक्षित करती है, परिणांमतः व्यक्ति स्वयं के, समाज के, राष्ट्र के एवं मानवता के परिमार्जन में सकारात्मक योगदान दे पाता है। और शायद इसीलिए प्राचीन काल से ही शिक्षकों तथा शिक्षण संस्थाओं को समाज में पूज्य की दृष्टि से देखा जाता था, तथा गुरु के आने पर राजा भी सिंहासन छोड़ दिया करते थे। परंतु वर्तमान में शिक्षण व्यवस्था, शिक्षक एवं शिक्षार्थी के बदलते स्वरूप तथा घटते मूल्यों के कारण न केवल शिक्षा एवं शिक्षक के आदर्श स्वरूप पर आघात लगा है वरन समाज में शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में प्रश्न उठने

लगे है। आज यदि एक तरफ शिक्षक एवं शिक्षण व्यवस्था के प्रति समाज की सोच में बदलाव आया है तो कहीं न कहीं यें संस्थाएं भी समाज को वह सशक्त आधार नही दे पा रहीं है जिससे समाज में श्रेष्ठ आदर्शों की स्थापना की जा सके। आज उच्च शैक्षिक उपलब्धि अर्जित कर उच्च पदस्थ व्यक्ति भी मूल्यहीन मिल जाते है, जिसकी देखा–देखी समाज दिखावे के अंधे दौड़ में शामिल हो ग्रहीत शिक्षा को भुला, भ्रष्टाचार से ग्रस्त हो, अनैतिक एवं अमर्यादित कार्य को करने के लिय अग्रसर हो जाता है।

वर्तमान में शिक्षा के व्यवसाायीकरण से निश्चित तौर पर शिक्षा का आधार विस्तृत हुआ है परंतु भारत जैसे देश में, जहां आज समाज का हर एक व्यक्ति कहीं न कहीं भ्रष्टाचार एवं समस्या के घेरे में है, क्या यह प्रक्रिया बिना व्यवस्थित निर्देश के उपयोगी होगी तथा शिक्षा के आदर्शों को स्थापित कर पाएगी या फिर समाज में अमीर–गरीब की खाईं को ही बनाए रखते हुए मूल्य विहीन एवं मात्र पुस्तकीय ज्ञान को शिक्षार्थी में स्थापित कर वर्तमान परंपरा को ही आगे बढा़येगी।

वर्तमान पाठ्यक्रम स्वरुप निश्चित तौर पर शिक्षा समस्याओं के कारणों में से है। इसकी अव्यवसायिकता, अप्रासंगिकता एवं अनुपयोगिता के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त बालक भी बेरोजगार रह जाते है तथा कभी–कभी सामाजिक तानो से तंग आकार आत्महत्या तक कर लेते हैं। वही उच्च पदस्थ लोगों तक को आधारभूत ज्ञान की दरकार रहती है।

शिक्षालय एक दीपक तथा शिक्षक एक बाती की तरह है जो स्वयं को ज्ञान रूपी तेल में भिगोकर समाज को प्रकाशित कर पथ प्रदर्शित करता है। बदलते परिवेश में भी शिक्षक की भूमिका एक समाज निर्माता के रूप में अहम है। जैसा कि प्रारम्भ में इंगित किया गया की शिक्षा सर्वांगीर्ण विकास का आधार है, तो शिक्षक को भी सर्वांगीर्ण पक्षों से पुष्ट एवं प्रखर होना चाहिए। आवश्यक है कि शिक्षा एवं समाज के प्रति समर्पित व्यक्ति ही शिक्षक बने या शिक्षा व्यवस्था से जुड़े. शिक्षक परंब्रम्ह का दर्जा पाये, उससे पहले आवश्यक है की उसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश के गुणविद्यमान हों।

आज यह सोचनीय विषय है की आधुनिक पद्धतियों से प्रदान की जाने वाली वर्तमान शिक्षा व्यवष्था की समाज में स्थिति क्या है। इस शिक्षा का मानव समाज में कितना योगदान हो रहा है। साथ ही यह भी जानना आवश्यक है कि वर्तमान शिक्षा प्राप्त लोगों में मूल्यो की स्तर क्या है. तथा उसके लिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था कितना उत्तरदायी है। चूंकि शिक्षा एक प्रक्रिया है अतः इसमें कई पक्ष अपनी भूमिका अदा करते हैं, जैसे शिक्षार्थी, शिक्षक, शिक्षण विधि, शिक्षण तकनीक, शिक्षण सामाग्री/पाठ्यक्रम, समाज, परिवार एवं वातावरण आदि।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

प्रस्तुत अध्ययन वर्तमान शिक्षाव्यवस्था तथा उसकी उपयोगिता पर एक विश्लेषण है, जिसे अध्ययनकर्ता ने एक शिक्षक के रूप में शिक्षकों, शिक्षार्थियों, अभिभावकों, एवं समाज के विचारों को समाहित करते हुए समझने का प्रयास किया है।

2– अध्ययन की प्रेरणा– आज भारत में पुस्तकीय ज्ञान तथा सामाजिक स्वरूप में व्यापक अंतर मिलता है। समाज के लोगो के विचार, विद्यार्थियों के क्रियाकलाप तथा आदर्श शिक्षा की स्थिति में अंतर की स्थिति में यह आवश्यक है की समाज से वर्तमान शिक्षा स्वरुप संबंधो की प्रतिपुष्टि समाज से की जाए जिसके लिए प्रस्तुत अध्ययन को चुना गया. हालाँकि इस विषय पर अन्यान्य विद्वानों ने अपने विश्लेषण किये है यथा – सक्सेना (1988), ने स्पष्ट किया कि पारिवारिक स्वरूप एवं स्तर का विद्यार्थी की उपलब्धि एवं समायोजन पर गहन प्रभाव पड़ता है। चित्रा (1998), ने स्पष्ट किया की विद्यार्थी के पारिवारिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थित का बालक के बुद्धि एवं समायोजन से सकारात्मक संबंध पाया जाता है। कुमुद (2004), ने स्पष्ट किया की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। सुभाष (2003), ने स्पष्ट किया की माता–पिता का विद्यार्थी की शैक्षिक क्रियाओं में सहभागिता का प्रभाव विद्यार्थी के शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर पड़ता है। प्रतिभा वी (2006), के अनुसार विद्यार्थियों में 40% तनावों का कारण विद्यालय है। दुबे (2011), ने स्पष्ट किया की विद्यार्थियों पर शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं पारिवारिक, सामाजिक माहौल का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर काफी प्रभाव पड़ता है तथा कैसे छात्रों में मूल्यो का विकास हो ताकि शिक्षा का प्रभाव स्थायी एवं अधिक उपलब्धि दायक हो। परिणामतः एक सार्थक पहल कर उपयुक्त शिक्षण विधि को समझने की इच्छा हुई, जिसके कारण प्रस्तुत अध्ययन को चुना।

3–अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन निम्न उद्देश्यों पर आधारित है–

1. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में सामाजिक अवधारणा को समझना।
2. वर्तमान शिक्षा के उन पक्षो को समझना जिसमें सुधार की विशेष आवश्यकता है।
3. समाज में मूल्यह्रास की स्थिति का आंकलन करना एवं सुधारने के उपायो को समझना।
4. छात्रों में नैतिकता की स्थापना कैसे हो ताकि उच्चश्रृंखलता पर नियंत्रण के साथ उच्चतम शैक्षिक निष्पादन को प्राप्त किया जा सके।

4– उपकल्पना– प्रस्तुत अध्ययन निम्न उपकल्पनाओ पर आधारित है–

- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अपने मूल उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल है।
- समाज में मूल्य ह्रास के मुख्य आधारों में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था भी है ।

- छात्रों में मूल्यों को विकसित करने के लिए भवनात्मक रूप से जुड़कर, उन्हे अभिप्रेरित करना आवश्यक है।

5– विधितंत्र– प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः प्राथमिक आंकड़ो पर आधारित है जिसमें न्यायदर्शों का चयन सुविधा की दृष्टि से, अध्ययन कर्ता द्वारा अपने कार्यक्षेत्र के चयनित विद्यालयों के शिक्षार्थी, शिक्षक, अभिभावको तथा आकस्मिक सर्वेक्षित चयनित लोगों से मतावली सर्वेक्षण एवं समाज भ्रमण के दौरान प्राप्त ज्ञान के निष्कर्षों पर आधारित है। जिसके लिए विभिन्न स्तरों एवं क्षेत्रों के150 विद्यार्थियों 50 शिक्षकों एवं 100 अभिभावकों से पूर्व परीक्षित स्वनिर्मित प्रश्नावली में भिन्न विंदुओं पर मंताव्यता एवं सुझाव प्राप्त किये तथा संगणक एवं सांख्यिकीय गणना से विश्लेषण किया गया है।

तालिका 1- प्रदत्त संकलन स्वरुप

क्रम संख्या	विद्यालय का नाम	विद्यार्थी	शिक्षक	अभिभावक एवं अन्य
1	केंद्रीय विद्यालय चमेरा 1, हिमाचल प्रदेश	50	10	20
2	राजकीय विद्यालय समलेऊ, हिमाचल प्रदेश	30	10	20
3	केंद्रीय विद्यालय डलहौजी, हिमाचल प्रदेश	20	10	20
4	डलहौजी पुब्लिक स्कूल डलहौजी, हिमाचल प्रदेश	20	10	10
5	अन्य	30	10	30
	कुल	150	50	100

श्रोत- स्वसेर्वेक्षण व परीक्षण 2021

6– विश्लेषण– शिक्षा समाज का निर्माण का आधार है, शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को तराशकर उसे समाज का महत्वपूर्ण अंग बनाया जाता है। व्यक्ति की शिक्षा माँ के आंचल से प्रारम्भ हो कफन के कपड़े में ही सिमटती है, परंतु दे जाती है आगे की पीढ़ियों को शिक्षा अर्थात शिक्षा एक असमाप्य प्रक्रिया है जो सदा ही चलती रहती है। मानव निर्माण में शिक्षा की भूमिका सर्वोच्च है, यह शिक्षा ही है जो व्यक्ति को मानव या दानव का रूप प्रदान करती है चाहे वह विद्यालय से मिली हो, परिवार से या फिर समाज से। शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीर्ण विकास का आधार है जो समय के साथ व्यक्ति को समाज की आवश्यक्ताओं के अनुसार तैयार करती है। परंतु वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में सामाजिक अवधारणा भारत में शिक्षा के प्रति स्थापित पवित्र विचारो से इतर दिखाई देती है। प्रस्तुत अध्ययन में, छात्रों के वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से जुड़ाव – जिसमे शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति, पाठ्यक्रम की प्रभाविता, शिक्षण विधियों की प्रभाविता, शिक्षकों की जीवन शैली, शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध, विद्यालय का माहौल आदि पक्षों, नैतिकता के संदर्भ उनकी समझ, विषय के ज्ञान स्तर एवं

भावी निष्पादन स्तर के संदर्भ में प्रश्नो के उत्तर प्राप्त किए गए ताकि छात्रों के वर्तमान स्तर का अनुमान लगाया जा सके।

6.1– शिक्षा का वर्तमान स्वरुप– शिक्षा की प्रक्रिया युग सापेक्ष होती है। युग की गति और उसके नए–नए परिवर्तनों के आधार पर प्रत्येक युग में शिक्षा की परिभाषा और उद्देश्य के साथ ही उसका स्वरूप भी बदल जाता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में चाहिए कि बच्चे की विभिन्नताओं (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, लैंगिक आदि) के होते हुए भी उन्हें सभी के साथ मिलकर ज्ञान सृजन करने के समान अवसर मिल सकें।

उनकी वैयक्तिक आवश्यकताओं के अनुरूप उन्हें कक्षा–कक्ष में उचित वातावरण मिल सके ताकि वे आत्म विश्वास, आत्मसम्मान, सकारात्मक सोच, प्रभावी सम्प्रेषण आदि गुणों को स्वयं में विकसित करते हुए सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास की ओर अग्रसर हो सकें। शिक्षक को चाहिए कि सामाजिक परिवर्तन को देखते हुए शिक्षा में गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए केवल अक्षर एवं पुस्तक ज्ञान का माध्यम न बनाकर शिक्षित को केवल भौतिक उत्पादन–वितरण का साधन न बनाया जाए अपितु नैतिक मूल्यों से अनुप्राणित कर आत्मसंयम, इंद्रियनिग्रह, प्रलोभनोपेक्षा, तथा नैतिक मूल्यों का केंद्र बनाकर भारतीय समाज, अंतरराष्ट्रीय जगत की सुख–शान्ति और समृध्दि को माध्यम तथा साधन बनाया जाय। विद्यालयी प्रणाली में शामिल प्रत्येक बच्चे को उसके सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषायी, शारीरिक क्षमता, मानसिक सामर्थ्य एवं उसके अधिगम के तौर तरीकों के सन्दर्भ में समझना आवश्यक है। इसी समझ के आधार पर बच्चे की सीखने–सिखाने की आवश्यकता के उपादानों को पहचानने में मदद मिल सकेगी। आज आवश्यक है की बच्चे एवं समाज की आवश्यकता के अनुसार विद्यालयी पाठ्यचर्या का अनुकूलन किया जाए, मूल्यांकन प्रणाली, विद्यालय तक पहुँच, विद्यालयी पाठ्यचर्या, बच्चे की अस्मिता के प्रति नजरिया में सुधर हो।

6.2– शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति सम्बन्धी अवधारणा– किसी भी पक्ष की सफलता का आंकलन उसके उद्देश्यों की प्राप्ति के स्टार एवं स्वरुप से किया जा सकता है इसी सन्दर्भ में, अध्ययन में, क्या वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम है? के संदर्भ में 6 प्रमुख शिक्षा उद्देश्यों के सन्दर्भ में चयनित लोगों की मंतव्यता प्राप्त की गयी. प्राप्त निष्कर्षों में (तालिका2) 43.67% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा, व्यक्ति के सर्वांगीर्ण विकास में सहायक है तथा अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर रही है वही आधे से अधिक, 57.34% लोग इसको नकारते है जो वरतमान शिक्षा व्यवस्था पर एक प्रश्नचिंह लगता है. यदि शिक्षा के उद्देश्यों के विभिन्न पक्षों को देखें

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

तो 44.33% लोगों के अनुसार वर्तमान शिक्षा छात्रों के शारीरिक विकास में सक्षम है, तो 40.67% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा व्यक्ति के नैतिक विकास में सक्षम है। 44% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा व्यक्ति के मानसिक विकास में सक्षम है। 45.33% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा व्यक्ति के सामाजिक सांस्कृतिक विकास में सक्षम है वहीं 41.33% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा व्यक्ति के तकनिकी विकास में सक्षम है तथा 48.33% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा व्यक्ति के आर्थिक विकास में सक्षम है।

यहां यह सर्वाधिक उल्लेखनीय है कि आधे से अधिक उत्तरदाता मानते है की वर्तमान शिक्षा अपने मूल शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में अशफल है. विचारणीय है कि मात्र 15% अभिभावक ही यह मानते है कि वर्तमान शिक्षा व्यक्ति के नैतिक विकास में सक्षम है जो कि शिक्षा का प्रथम उद्देश्य है जबकि 85% ऐसा नहीं मानते. क्योकि विना नैतिक आधार के मानव समाज का निर्माण संभव नहीं है एवं नैतिकता विहीन मानव समाज, मानव समाज नहीं है अतः भारत के शिक्षा नियोजकों को इस विन्दु पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

साथ ही शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के सन्दर्भ में सकारात्मक उत्तर का प्रतिशत अभाभावाकों का बहुत कम है जबकि शिक्षकों में अधिक है जो एक नकारात्मक आधार देता है हालाँकि आज आर्थिक युग है एवं प्रत्येक अभिभावक अधिक सचेत है लेकिन इतनी असंतुष्टि निश्चित तौर पर हमें विचार करने को विवश करती है कि शिक्षा व्यवस्था को समाज की आवश्यकता एवं सचेतता से जोड़ा जाए।

तालिका 2- वर्तमान शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति सम्बन्धी अवधारणा

क्र सं	वर्तमान शिक्षा के उद्देश्य	छात्र		शिक्षक		अविभावक व अन्य		कुल	
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
1	शारीरिक विकास में सक्षम है	48.67	51.33	48.00	52.00	36.00	64.00	44.33	55.67
2	नैतिक विकास में सक्षम है	54.00	46.00	52.00	48.00	15.00	85.00	40.67	59.33
3	बौद्धिक विकास में सक्षम है	52.67	47.33	52.00	48.00	27.00	73.00	44.00	56.00
4	सांस्कृतिक विकास में सक्षम है	54.67	45.33	44.00	56.00	32.00	68.00	45.33	54.67
5	तकनीकी विकास में सक्षम है	44.67	55.33	42.00	58.00	36.00	64.00	41.33	58.67
6	आर्थिक विकास में सक्षम है	50.00	50.00	64.00	36.00	38.00	62.00	48.33	59.67
	कुल औसत	50.78	49.22	50.33	49.67	30.67	69.33	43.67	57.34

श्रोत- स्वसेर्वेक्षण व परीक्षण 2019

6.3– वर्तमान पाठ्यक्रमों कि उपादेयता– आज भारत में विद्यालयी पाठ्यचर्या का निर्धारण एन0सी0एफ0 2005 के आलोक में किया जाता हैं. परन्तु विद्यालयी विषयों की विषय वस्तु बच्चे के अपने परिवेश एवं वातावरण से सम्बन्धित न होने से बच्चा ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया से जुड़ नहीं पाता है, बच्चा सूचनाओं का संग्राहक एवं रटन्त प्रणाली का संवाहक बनकर रह जाता हैं। विद्यालयी पाठ्यचर्या विद्यालय अनुभवों एवं जीवन के बीच ठोस रिश्ता स्थापित करने में असमर्थ रही है। परिणामतः इसकी उपदेयता पर प्रश्चिंह लगने लगे है. इसी सम्बन्धी समाजिक अवधारणा के संदर्भ में कुल उत्तरदाताओं में 41.83% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा पाठ्यक्रम की विविध आधारों से उपादेयता है जबकि 58.17% लोगों के अनुसार पाठ्यक्रम उपदेयी एवं व्यावहारिक नहीं है।

39.33% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा पाठ्यक्रम रोजगार प्रदायी है। 42% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा पाठ्यक्रम व्यावहारिक है. 41.33% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा पाठ्यक्रम छात्रों के स्तरानुकुल है। 42.67% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा पाठ्यक्रम विविधतापूर्ण है एवं समायोजन में सहायक है। 43% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा पाठ्यक्रम सशक्तिकरण प्रदान करती है। यहाँ उल्लेखनीय है कि मात्र 31% अभिभावक ही यह मानते है कि वर्तमान पाठ्यक्रम रोजगार प्रदान करने में सक्षम है जबकि 19% अभिभावक ही मानते कि वर्तमान पाठ्यक्रम छात्रों के स्तारानुकूल है। यहाँ शैक्षिक पाठ्यक्रमों की उपादेयता के सन्दर्भ में सकारात्मक उत्तर का प्रतिशत अभाभावकों का बहुत कम है जबकि छात्रों में अधिक है जो प्रत्येक अभिभावक अधिक सचेतता को स्पष्ट करता है लेकिन इतनी असंतुष्टि निश्चित तौर पर हमें विचार करने को विवश करती है कि शिक्षा पाठ्यक्रमों को समाज की आवश्यकता एवं सचेतता से जोड़ा जाए, एवं रोजगार प्रदायी बनाया जाए। जैसा की राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने भी अपनी बुनियादी शिक्षा में स्पष्ट किया था। आवश्यक है कि पूरे देश का स्तरानुसार पाठ्यक्रम समान हो ताकि छात्र अभिभावक को पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में शिक्षा केंद्र का चुनाव न करना पड़े. एवं प्रत्येक छात्र के शिक्षा का राष्ट्र निर्माण में योगदान हो सके। अभी सामान डिग्री के बावजूद एक क्षेत्रीय विश्वविद्यालय का विद्यार्थी को जेएनयू जैसी संस्थाओ के छात्रों के समक्ष स्थान नहीं मिलता है जिसमें पाठ्यक्रम के स्वरुप का भी योगदान है। यहाँ यह भी आवश्यक है कि माध्यमिक शिक्षा (9–12) कम से कम 5 वर्ष की हो जो सभी छात्रों के लिए सामान तथा ज्ञान के सभी पक्षों (ज्ञान, विज्ञानं एवं कला) को समाहित किये हुए हो। जिसमें 1 वर्ष का समय छात्र के व्यवसाय प्रशिक्षण का होना चाहिए। इससे न केवल रोजगार को बढ़ावा मिलेगा वरन छात्रों के उर्जा का सही समय पर देश को लाभ मिल

सकेगा तथा छात्र अनावश्यक डिग्री के बोझ तले दबने के बजाय अपने जीवन को उपयोगी बना सकेंगे|

तालिका 3- वर्तमान पाठ्यक्रमों कि उपादेयता सम्बन्धी अवधारणा

क्र सं	पाठ्यक्रमों की उपादेयता	छात्र		शिक्षक		अविभावक व अन्य		कुल	
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
1	रोजगार प्रदायी है	51.33	48.67	64.00	36.00	31.00	69.00	39.33	60.6
2	व्यावहारिक	44.67	55.33	48.00	52.00	33.00	67.00	42.00	58.0
3	स्तारानुकूल	54.00	46.00	52.00	48.00	19.00	81.00	41.33	58.6
4	विविधतापूर्ण	54.67	45.33	44.00	56.00	31.00	69.00	42.67	57.3
5	समायोजन में सहायक	54.67	45.33	44.00	56.00	32.00	68.00	42.67	57.3
6	सशक्तिकरण प्रदान	45.33	54.67	42.00	58.00	35.00	65.00	43.00	57.0
	कुल औसत	50.78	49.22	49.00	51.00	30.17	69.83	41.83	58.1

श्रोत- स्वसेर्वेक्षण व परीक्षण 2019

6.4– शिक्षण विधि की सार्थकता सम्बन्धी अवधारणा– किसी भी शिक्षण क्रिया की सार्थकता शिक्षण विधि पर भी निर्भर करती है क्योंकि इसका सम्बन्ध सीधे छात्रों के अधिगम स्तर से होता है. आज विद्यालयों में तकनीक आधारित शिक्षण का प्रचलन बढ़ा है जिसका प्रभाव भी सकारात्मक है लेकिन समग्रता से विषय वस्तु को परिवेश एवं वातावरण से सम्बन्धित कर विश्लेषण करना आवश्यक है| देश में शिक्षण व्यवस्था के व्यवसायीकरण एवं शिक्षक स्तर का सम्बन्ध शिक्षण विधि की प्रभाविता से है| इस सम्बन्धी समाजिक अवधारणा के संदर्भ में कुल उत्तरदाताओं में 41.94% लोगों का मानना है कि वर्तमान शिक्षण विधि विविध आधारों से सार्थक है जबकि 58.06% लोगों के अनुसार नहीं है| इस संदर्भ में 44% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षण विधि उत्साह एवं क्रियाशीलतायुक्त कुशल है. 41.33% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षण विधि सरल सहज एवं सम्प्रेषण युक्त है. जबकि 42% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षण विधि छात्रों के स्तरनुरूप है. 40.7% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षण विधिरुचिकर एवं प्रभाओत्पादक है एवं 40% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षण विधि स्तरीय एवं तकनीक युक्त है, 43.67% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षण विधियों में नैतिक एवं सामाजिक गुण समाहित है| इस सन्दर्भ में भी शिक्षण विधियों की सार्थकता के सन्दर्भ में सकारात्मक उत्तर का प्रतिशत अभाभावाकों का बहुत कम है. जबकि शिक्षकों में अधिक है| जो प्रत्येक अभिभावक अधिक सचेतता को स्पष्ट करता है और इसीलिए आज प्रत्येक अभिभावक ट्यूशन के ऊपर ज्यादा निर्भर दिखता है| लेकिन इतनी असंतुष्टि निश्चित तौर पर हमें विचार करने को विवश करती है कि शिक्षण विधियों को उनकी छात्रों पर

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

प्रभाविता से जोड़ा जाए ताकि वें पाठ्यक्रम का समग्र स्वरुप छात्रों में स्थापित कर सकें। साथ ही संगडक आधारित पाठवृक्ष, परिवेश एवं आधुनिक तकनीकों से युक्त शिक्षण विधि को बढ़ावा दिया जाये और उसके लिए कम से कम माध्यमिक स्तर तक के शिक्षकों को मध्यावधि प्रशिक्षण के दौरान सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से सम्बंधित सामग्री भी उपलब्ध करायी जाये।

तालिका 4- वर्तमान शिक्षण विधि की सार्थकता सम्बन्धी अवधारणा

क्र सं	वर्तमान शिक्षण विधि	छात्र		शिक्षक		अविभावक व अन्य		कुल	
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
1	उत्साह एवं क्रियाशीलतायुक्त	54.67	45.33	36.00	64.00	31.00	69.00	44.00	56.00
2	सरल सहज एवं सम्प्रेषण युक्त	45.33	54.67	52.00	48.00	35.00	65.00	41.33	58.67
3	छात्रों के स्तरनुरूप	49.33	50.67	48.00	52.00	37.00	63.00	42.00	58.00
4	रोचक एवं प्रभावोत्पादक	44.67	55.33	56.00	44.00	32.00	68.00	40.67	59.33
5	स्तरीय	44.67	55.33	56.00	44.00	14.00	86.00	40.67	59.33
6	नैतिक एवं सामाजिक गुण समाहित	37.33	62.67	38.00	62.00	30.00	70.00	43.67	56.33
	कुल औसत	46.00	54.00	48.33	51.67	29.83	70.17	41.94	58.06

श्रोत- स्वसेर्वेक्षण व परीक्षण 2019

6.5— मूल्यांकन प्रणाली : मूल्याङ्कन, शिक्षा व्यवस्था का आधार स्वरुप है, जिससे शिक्षा व्यवस्था के सफलता का आंकलन विद्यार्थी के अधिगम एवं कार्य स्वरुप से होता है. लेकिन विगत समय में नक़ल प्रणाली तथा अंको के अंधाधुंध फैलाव को बढ़ावा मिल रहा है. छात्रों का अधिगम निष्पत्ति स्तर भी घट रहा है. विभिन्न संस्थाओं में मूल्याङ्कन स्वरुप में एकरूपता नहीं मिलती है तथा कभी— कभी शिक्षा व्यवस्था में परीक्षा प्रणाली को भयादोहन के एक सशक्त औजार के रूप में प्रयोग किया जाता है। परीक्षा में असफलता के लिए अधिगमकर्ता को पूरी तरह से जिम्मेदार ठहराया जाता है, शिक्षा प्रणाली/तंत्र की कोई जवाबदेही तय नहीं है। बच्चे के लिए शिक्षा का मतलब परीक्षा पास करना होता है और शिक्षक का उद्देश्य परीक्षा पास करने के लिए मशीनीकृत ढंग से बच्चे को इसके लिए तैयार करना जिससे आज मूल्याङ्कन प्रणाली पर प्रश्न उठने लगे है। इस सम्बन्धी समाजिक अवधारणा के संदर्भ में कुल उत्तरदाताओं में 34% लोगों का मानना है कि वर्तमान मूल्याङ्कन प्रणाली विविध आधारो से सफल है जबकि 66% लोगों के अनुसार नहीं है। इस संदर्भ में 38% लोगो का मानना है कि वर्तमान मूल्याङ्कन का स्वरुप ठीक है। 60% लोगो का मानना है कि वर्तमान मूल्याङ्कन स्वरुप नियमित है। जबकि 39% लोगो का मानना है कि वर्तमान मूल्याङ्कन छात्रों के स्तरनुरूप है। 24% लोगो का मानना है कि वर्तमान मूल्याङ्कन स्वरुप विश्वसनीय है एवं 19.33% लोगो का मानना है कि वर्तमान मूल्याङ्कन स्वरुप छात्रों का सम्पूर्ण आंकलन करने में

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

सक्षम है है, वहीं 24.67% लोगो का मानना है कि वर्तमान बबम प्रणाली पूर्व प्रणालिओं से अच्छी है। इस सन्दर्भ में भी मूल्याङ्कन स्वरुप की सार्थकता के सन्दर्भ में सकारात्मक उत्तर का प्रतिशत अभाभावाकों का बहुत कम है. जबकि शिक्षकों में अधिक है जो प्रत्येक अभिभावक अधिक सचेतता को स्पष्ट करता है. लेकिन साथ ही यह भी स्पष्ट करता है की वर्तमान शिक्षा में मूल्याङ्कन प्रणाली को स्तरीय, विश्वसनीय, समग्र एवं सामान बनाने की जरूरत है।

तालिका 5- वर्तमान मूल्याङ्कन स्वरुप की उपादेयता सम्बन्धी अवधारणा

क्र सं	वर्तमान शिक्षा के उद्देश्य	छात्र		शिक्षक		अविभावक व अन्य		कुल
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ
1	मूल्याङ्कन का स्वरुप ठीक है	36.67	63.33	78.00	22.00	21.00	79.00	38.33
2	नियमित है	64.67	35.33	90.00	10.00	39.00	61.00	60.33
3	छात्रों के स्तरनुरूप	37.33	62.67	76.00	24.00	23.00	77.00	39.00
4	विस्वसनीय है	30.00	70.00	32.00	68.00	12.00	88.00	24.33
5	सम्पूर्ण आंकलन करने में सक्षम है	23.33	76.67	26.00	74.00	10.00	90.00	19.33
6	cce प्रणालीअच्छी है	43.33	56.67	4.00	96.00	7.00	93.00	24.67
	कुल औसत	39.22	60.78	51.00	49.00	18.67	81.33	34.33

श्रोत- स्वसेर्वेक्षण व परीक्षण 2019

6.6– वर्तमान शिक्षक जीवनशैली सम्बन्धी अवधारणा – शिक्षक की भूमिका एक समाज निर्माता के रूप में अहम होती है। जैसा कि प्रारम्भ में इंगित किया गया कि शिक्षा सर्वांगीर्ण विकास का आधार है, तो शिक्षक को भी सर्वांगीर्ण पक्षो से पुष्ट एवं प्रखर होंना चाहिए। आवश्यक है कि शिक्षक परंब्रहम का दर्जा पाये, उससे पहले आवश्यक है की उसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश के गुणविद्यमान हों। वह शिक्षा एवं समाज के प्रति समर्पित हो अपने छात्रों में उत्तम शिक्षण विधि एवं अभिप्रेरणा से पाठयवस्तु को सरल, रोचक, एवं बहुआयामी बनाकर छात्रों में स्थापित करें।

वह छात्रों को परिपक्व, मूल्यवान, गुणवान तथा कर्मशील बनायें ताकि छात्र उच्च शैक्षिक उपलब्धि अर्जित कर नैतिक, सांस्कृतिक एवं कर्तव्यपरायण रहते हुए समाज के उत्थान में अपना योगदान दे सके। परन्तु आज कुछ तुच्छ शिक्षकों के विविध निम्न स्तरीय कुकृत्यों एवं समाज की भौतिकतावादी सोच से समाज में शिक्षकों की पवित्रता पर संदेह व्याप्त होने लगा है इसी सन्दर्भ में समाजिक अवधारणा के संदर्भ में तालिका 6 के अनुसार कुल उत्तरदाताओं में 61% लोगों का मानना है कि अभी भी कुल मिलाकर शिक्षकों की जीवन शैली ठीक है जबकि 39% लोगों के अनुसार नहीं है। उत्तरदाताओं में 60% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षक वर्तमान शिक्षक कुशल एवं परिश्रमी है। 51.6% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षक नियमित एवं कर्तव्यनिष्ठ है एवं अपने

पेसे के साथ न्याय करते है। 67.7% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षक प्रेरणयुक्त एवं नैतिक आचरण करनेवाले है। 58.3% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षक अपने पेसे के साथ न्याया करते है। 68% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षक सतत अपने छात्रो के हित के बारे में सोचते है तथा अपने छात्रों से भावनात्मक जुड़ाव रखते है. हालाँकि सबसे ज्यादा असंतुष्टि शिक्षकों की अनियमितता को लेकर है।

इस सन्दर्भ में भी मूल्यांकन स्वरुप की सार्थकता के सन्दर्भ में सकारात्मक उत्तर का प्रतिशत अभाभावकों का कम है. जबकि शिक्षकों में अधिक है जो शिक्षक समुदाय के चिंता का विषय है क्योंकि शिक्षकों की पूँजी ही समाज में उनका पूज्य स्थान है अतः हमें उस मर्यादा को बनाये रखने की आवस्यकता है। लेकिन जरूरी है कि शिक्षा नियोजक शिक्षकों के चुनाव को अधिक प्रतिस्पर्धी एवं स्वक्ष बनाये। यहाँ पूरे भारत में केंद्रीकृत शिक्षक चयन आयोग होना चाहिए तथा शिक्षा प्रशासन अनिवार्यतः शिक्षक पृष्ठभूमि से होनी चाहिए. शिक्षकों का प्रशिक्षण कम से कम 3 साल का हो। शिक्षकों को सर्वगिर्ण पक्षों से प्रशिक्षित जाये जिसमें कुछ समय सेना के माध्यम से भी दिया जाये. आज जहाँ एक तरफ सरकारें एक पटवारी की परीक्षा इतने सजगता से कराती है वही भारत में अस्सिस्टेंट प्रोफेसर के चुनाव का प्रत्यक्ष तथा केंद्रीकृत मापदंड नहीं बनाया जा सका है और आज शिक्षक के स्तर में जो गिरावट आई है उसका कारण भी भेदभाव पूर्ण ढंग से तथा अयोग्य शिक्षकों के चुनाव ही है।

तालिका 6- वर्तमान वर्तमान शिक्षक जीवनशैली सम्बन्धी अवधारणा

क्र सं	वर्तमान शिक्षा के उद्देश्य	छात्र		शिक्षक		अविभावक व अन्य		कुल
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ
1	परिश्रमी	52.00	48.00	90.00	10.00	57.00	43.00	60.00
2	नियमित	50.67	49.33	86.00	14.00	36.00	64.00	51.67
3	कर्त्तव्य निष्ठ	66.67	33.33	94.00	6.00	41.00	59.00	62.67
4	आचरण युक्त	73.33	26.67	78.00	22.00	54.00	46.00	67.67
5	संस्था के हित में	70.00	30.00	76.00	24.00	32.00	68.00	58.33
6	छात्रों के हित में	63.33	36.67	86.00	14.00	66.00	34.00	68.00
	कुल औसत	62.67	37.33	85.00	15.00	47.67	52.33	61.39

श्रोत- स्वसेर्वेक्षण व परीक्षण 2019

6.7– वर्तमान छात्र जीवनशैली एवं शिक्षक छात्र संबंध सम्बन्धी अवधारणा, शिक्षा व्यवस्था का केंद्र विन्दु छात्र है, जब तक छात्र अनुशासित नहीं है, शिक्षण का कोई महत्व नहीं है। यह देखा गया है

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

कि जब समाज, संस्कृति, परिवेश द्वारा बच्चे के नजरिए का सम्मान नहीं होता है, तो बच्चे का अपने समाज, संस्कृति, परिवेश के प्रति नजरिया बदल जाता है और बहुधा वह स्वयं को हेय एवं हीन–दीन समझने लगता है। इसकी परिणति पलायन के रूप में होती है और बच्चे के शिक्षा से बहिष्करण के खतरे बढ़ जाते हैं। आज बढती छात्र आत्महत्याएं एवं अपराध, छात्रों में नैतिकता के आभाव, शिक्षा से पलायन एवं परिवार से विद्वेष की स्थिति आम हो गयी है। जिसके लिए जहाँ एक तरफ हमारी आदतें, समाज का व्यवहार उत्तरदायी है तो कही उससे ज्यादा शिक्षक एवं शिक्षा व्यवस्था उत्तरदायी है।

आज के संदर्भ में छात्रों के बदलते स्वरुप के सन्दर्भ में तालिका 7 के अनुसार 41% लोगो का मानना है कि वर्तमान छात्रों की जीवन शैली ठीक है वही 59% लोग इसे नकारते है। 42% लोगो का मानना है कि वर्तमान छात्रों परिश्रमी है. मात्र 30.67% लोगो का मानना है कि छात्र अब भी शिक्षकों का सम्मान करते है। 41% लोगो का मानना है कि वर्तमान छात्र नियमित है. 48.7% लोगो का मानना है कि वर्तमान छात्र कर्त्तव्य निष्ठ है। 41% लोगो का मानना है कि वर्तमान छात्र अपने स्तर के अनुसार ज्ञान भी रखते है जबकि मात्र 26% लोगो का मानना है कि वर्तमान छात्र भी मूल्यों से युक्त है. यहाँ उल्लेखनीय है कि मात्र 19þ अभिभावक ही छात्रों को मूल्य युक्त मानते है, जबकि मात्र 24% शिक्षक ही यह मानते है की वर्तमान में छात्र भी शिक्षकों का सम्मान करते है। अतः अब आवश्यकता है की अभिभावक एवं शिक्षक दोनों मिलकर छात्रों में मूल्यों का विकास करें क्योंकी मूल्ययुक्त ज्ञान ही समाज को सही दिशा दे सकता है। जरूरी है की समाज का हर पक्ष छात्रों को बनाने में अपनी प्रभावी भूमिका अदा करें क्योंकि यही तो है जो वर्तमान पीढ़ी को आगे ले जाते है।

तालिका 7- वर्तमान वर्तमान छात्र जीवनशैली एवं शिक्षक छात्र संबंध सम्बन्धी अवधारणा

क्र सं	वर्तमान छात्र जीवनशैली	छात्र		शिक्षक		अविभावक व अन्य		कुल	
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
1	परिश्रमी	53.33	46.67	38.00	62.00	27.00	73.00	42.00	58.0
2	छात्र सम्मान	30.67	69.33	24.00	76.00	34.00	66.00	30.67	69.3
3	नियमित	47.33	52.67	36.00	64.00	36.00	64.00	41.67	58.3
4	कर्तव्य निष्ठ	51.33	48.67	64.00	36.00	37.00	63.00	48.67	51.3
5	स्तर योग्य ज्ञान वाले	44.67	55.33	48.00	52.00	32.00	68.00	41.00	59.0
6	मूल्य युक्त	54.00	46.00	52.00	48.00	19.00	81.00	42.00	58.0
	औसत	46.89	53.11	43.67	56.33	30.83	69.17	41.00	59.0(

श्रोत- स्वसेर्वेक्षण व परीक्षण 2019

©IJARMS JOURNAL, 2021 WWW.IJARMS.ORG

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

6.8– विद्यालय एवं शिक्षा प्रशासन की प्रभाविता सम्बन्धी अवधारणा शिक्षा प्रशासन ही शिक्षा के स्वरुप एवं दिशा का निर्धारण करता है। लेकिन आज भी भारत के शैक्षिक प्रशासन की विभिन्न संस्थाओं का संचालन गैर शैक्षिक कार्य की पृष्ठभूमि वाले लोग ही करते है जिससे देखा गया है कभी–कभी सही पक्षों का विकास नहीं हो पाता है। वहीँ विद्यालय धन कमाने का केंद्र बनते जा रहे है। इसीलिए समाज में विद्यालय प्रशासन के प्रति भी मानसिकता बदल रही है। वर्तमान शिक्षा प्रशासन की प्रभाविता सम्बन्धी अवधारणा के संदर्भ में तालिका 8 के अनुसार मात्र 43% लोगों का मानना है कि वर्तमान विद्यालय एवं शिक्षा प्रशासन शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु इमानदार प्रयास करते है, वहीँ 45% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा प्रशासक कुशल शिक्षण व्यवस्था को प्रभावी बनाने के लिए तत्पर रहते है। 38% लोगो का मानना है कि वर्तमान विद्यालय शिक्षण व्यवस्थाओं का छात्र हित मे सही उपयोग कर पाते है।

36% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा प्रशासक, शिक्षक हित एवं शिक्षा निर्देशन में प्रभावी भूमिका निभाते है। जबकि 42% लोगो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा प्रशासक अन्य प्रशाशनिक अभिकरणो की तरह कार्य नहीं करते। 41% लोगो का मानना है कि वर्तमान विद्यालय शिक्षण हेतु सुविधाओं का सही उपयोग करते है तथा शिक्षण व्यवस्थाओं का छात्र हित मे सही उपयोग करते है। अतः स्पष्ट है भारत की शिक्षा व्यवस्था को पुष्ट करने के लिए शैक्षिक प्रशासन को शिक्षा की तरह सोचना होगा न की प्रशासन की तरह यहाँ शिक्षक एवं प्रशासक दोनों को कुशल एवं त्यागी होना होगा। यदि एक भी गलत है तो दूसरा भी गलत हो जाता है एवं शैक्षिक उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाते।

शिक्षा प्रशासक को शिक्षा के सभी पक्षों का ज्ञान जरूरी है। हमारा नालंदा एवं तक्षशिला का इतिहास इस बात को पुष्ट करता है कि शिक्षक सर्वोत्तम प्रशासक हो सकता है। अतः इस दिशा में शिक्षा नियोजकों को सोचना होगा। शैक्षिक पृष्ठभूमि के लोगों में से अखिल भारतीय शिक्षा सेवा के माध्यम से शिक्षा प्रशासकों का चयन एक उचित सुझाव हो सकता है जो न केवल कुशल लोगो को शिक्षा की तरफ आकर्षित करेगा, वरन शिक्षकों को भी अपनी योग्यता सतत परिवर्धित करने हेतु प्रेरित करेगा।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

तालिका 8- वर्तमान विद्यालय एवं शिक्षा प्रशासन की प्रभाविता सम्बन्धी अवधारणा

क्रसं	विद्यालय एवं शिक्षा प्रशासन की प्रभाविता	छात्र		शिक्षक		अविभावक व अन्य		कुल
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ
1	प्रभावी नियंत्रण	46.67	53.33	68.00	32.00	31.50	68.50	45.17
2	छात्र हित में सजग	38.00	62.00	42.00	58.00	36.50	63.50	38.17
3	शिक्षक हित को पूरा करते है	52.67	47.33	64.00	36.00	31.50	68.50	47.50
4	परीक्षा इमानदारी से होती है	42.67	57.33	48.00	52.00	32.50	67.50	40.17
5	विविधतापूर्ण कार्य	64.67	35.33	52.00	48.00	19.50	80.50	47.50
6	विद्यालय अनुशं ठीक है	43.33	56.67	64.00	36.00	26.00	74.00	41.00
7	कुल औसत	48.00	52.00	56.33	43.67	29.58	70.42	43.25

श्रोत- स्वसेर्वेक्षण व परीक्षण 2019

6.9– वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में समस्याओं की प्रभावित सम्वन्धी अवधारणा– आज शिक्षा व्यवस्था में अन्यान्य समस्याएं व्याप्त है जिसके प्रति समाज की सोच एवं प्रभाविता को समझना आवश्यक है इसी सन्दर्भ में तालिका 9 के अनुसार 43.7% लोगों के अनुसार पाठ्यक्रम का व्यावसायिक न होना, 41.7% के अनुसार शिक्षकों का समय पर न आना, 55% के अनुसार शिक्षण का प्रयोगात्मक न होना, 46.33% के अनुसार छात्रों का रूचि न लेना, 51.67% के अनुसार परीक्षाओं का स्तरीय न होना, 41.33% के अनुसार समाज में शिक्षक का गिरता स्तर, 59% विद्यालय में संसाधनों का आभाव, 45.33% के अनुसार प्रशासन की अव्यवस्थित नीतिया, 51% छात्र शिक्षक संबंधो का गिरता स्तर, 46% के अनुसार शिक्षक भर्ती स्तरीय न होना 44.7% के अनुसार शिक्षा में शोध में गुणवत्ता का अभाव, प्रमुख समस्याए है जिस पर ध्यान की जरूरत है. भारत के सन्दर्भ में शिक्षा को पुष्ट बनाने के लिए प्रशासकों को इमानदार प्रयास करने की जरूरत है।

शिक्षा का अधिकार नहीं वरन गुणवत्तापूर्ण निःशुल्क शिक्षा का अधिकार देने की जरूरत है छात्रों में जाति या धर्म का आधार लेकर शिक्षा में भेदभाव करना उचित नहीं. शिक्षा जीवन का अधिकार है और इसकी साड़ी समस्याओं का निराकरण सरकार का दायित्व यदि सरकारें सभी को निःशुल्क गुणवत्तापूर्ण रोजगार प्रदायी शिक्षा दे तो हर नागरिक अपने परों पर खड़ा हो सकता है. और इसके लिए शिक्षा प्रशासन को सजग, शिक्षकों को इमानदार और नागरिकों को सतर्क होना होगा. एवं पाठ्यक्रम, शिक्षण, परीक्षा, प्रशासन, नैतिकता एवं गुणवत्ता जैसे पक्षों पर व्यवस्थित प्रयास की जरूरत है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

तालिका 9- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में समस्याओं की प्रभाविता सम्बन्धी अवधारणा

क्रसं	शिक्षा व्यवस्था में समस्याओं की प्रभाविता	छात्र		शिक्षक		अविभावक व अन्य		कुल
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ
1	पाठ्यक्रम का व्यावसायिक न होना	54.00	46.00	44.00	56.00	28.00	72.00	43.67
2	शिक्षकों का समय पर न आना	44.67	55.33	42.00	58.00	37.00	63.00	41.67
3.	शिक्षण का प्रयोगात्मक न होना	76.67	23.33	36.00	64.00	32.00	68.00	55.00
4	छात्रों का रूचि न लेना	50.67	49.33	64.00	36.00	31.00	69.00	46.33
5	परीक्षाओं का स्तरीय न होना	66.00	34.00	48.00	52.00	32.00	68.00	51.67
6	समाज में शिक्सक का गिरता स्तर	54.00	46.00	52.00	48.00	17.00	83.00	41.33
7	विद्यालय में संसाधनों का आभाव	65.33	34.67	68.00	32.00	45.00	55.00	59.00
8	प्रशासन की अव्यवस्थित नीतिया	54.67	45.33	44.00	56.00	32.00	68.00	45.33
9	छात्र शिक्षक संबंधो का गिरता स्तर	64.00	36.00	42.00	58.00	36.00	64.00	51.00
10	शिक्षा में शोध में गुणवत्ता का अभाव	51.33	48.67	42.00	58.00	36.00	64.00	44.67
11	शिक्षक भर्ती स्तरीय नहीं है	54.67	45.33	48.00	52.00	32.00	68.00	46.00
	कुल	58.89	41.11	48.89	51.11	32.22	67.78	48.33

श्रोत- स्वसेर्वेक्षण व परीक्षण 2019

6.10– वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सुधार प्रयासों का स्तर एवं प्रभाविता सम्वन्धी अवधारणा– वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सुधार योजनाओं की प्रभाविता के सन्दर्भ में मंतव्यता के सन्दर्भ में तालिका10 के अनुसार 41.50% लोग मध्यान्ह भोजन योजना को सफल मानते है. 46.50% लोग शिक्षा के अधिकार योजना को सफल मानते है, 40.50% लोग दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा को सफल मानते है 33.83% लोग शिक्षा के निजीकरण को सफल मानते है 31.33% लोग सरकारी विद्यालय को सफल मानते है 45. 08% लोग सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को सफल मानते है. यहाँ विच्रारनीय है कि शिक्षा के अधिकार के अलावा अन्य योजनाओं के सन्दर्भ में लोगों को मंताव्यता निम्न है।

आज भारत के लोग गुणात्मक शिक्षा की इच्छा रखते है जिस पर सरकार को सोचना आवश्यक है। जरूरी है कि शिक्षा की पहुँच सभी तक हो लेकिन अच्छा तब होगा जब गुणात्मक शिक्षा सब तक पहुंचेगी. मध्यान्ह भोजन एक अच्छी योजना है जो या तो भ्रष्टाचार से युक्त मिलती है या शिक्षक केवल खाना खिलने में इतिश्री समझते है अतः एक पृथक ढांचे की जरूरत है ताकि शिक्षक केवल इमानदार शिक्षण करें. दूरस्थ एवं प्रौढ़ शिक्षा अच्छी योजनाये है परन्तु गुणवत्ता से समझौता कर दी गयी डिग्री निश्चित तौर पर हानिकारक है. शिक्षा के निजीकरण में मूल्य का पक्ष दब रहा है अधिक फीस अभिभावकों का शोषण आम है सरकार को सूचना होगा की क्यों लोग निःशुल्क शिक्षा के बजे शुल्क शिक्षा में विश्वास करते है. कारण एक गुणवत्ता युक्त शिक्षा. शिक्षा नियोजकों को निजी संस्थानों की सीमाएं सुनिश्चित करनी होगी वही सरकारी संस्थाओं के लक्ष्य

निर्धारित करने होंगे। बबम की असफलता इस बात को सिद्ध करती है कि बोर्ड परीक्षाएं सफल है लेकिन परीक्षाएं समेस्टर में हो तो कुशल विकास होगा।

तालिका 10- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सुधार प्रयासों का स्तर सम्वन्धी अवधारणा-

क्रसं	शिक्षा व्यवस्था में सुधार का स्तर एवं प्रभाविता	छात्र		शिक्षक		अविभावक व अन्य		कुल	
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
1	मध्यान्हभोजन	44.67	55.33	42.00	58.00	36.50	63.50	41.50	58.50
2	शिक्षा का अधिकार	50.67	49.33	64.00	36.00	31.50	68.50	46.50	53.50
3	दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा	43.33	56.67	48.00	52.00	32.50	67.50	40.50	59.50
4	शिक्षा के निजीकरण	37.33	62.67	52.00	48.00	19.50	80.50	33.83	66.17
5	सरकारी विद्यालय	40.67	59.33	42.00	58.00	12.00	88.00	31.33	68.67
6	सतत एवं व्यापक मूल्यांकन	54.50	45.50	44.00	56.00	31.50	68.50	45.08	54.92
	औसत	45.20	54.81	48.67	51.33	27.25	72.75	39.79	60.21

श्रोत- स्वसेर्वेक्षण व परीक्षण 2019

इस प्रकार हम देखते है की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का कोई भी पक्ष समाज की दृष्टि से आदर्श भूमिका नहीं प्रस्तुत करता है जो शिक्षक एवं शिक्षण व्यवस्था में आए ह्रास का प्रतीक है। इस ह्रास के अनेक कारणो में –1)– शिक्षक का गिरता स्तर– आदर्श शिक्षक उस बाती की तरह होता है जो ज्ञान एवं आदर्श रूपी तेल को अपने में समेटकर समाज को अवलोकित करता है। क्या आज का शिक्षक इस अवधारणा को धारित करता है. आए दिन शिक्षक छात्रों के अस्वस्थ शिक्षक छात्र सम्बन्धों की चर्चा, शिक्षण परिक्षण में पूर्ण ईमानदारी का ना होना, विद्यालय में शिक्षक गुटबाजी का होना स्वार्थपरता एवं चापलूसी जैसे विचार, कर्तव्य परायणता से ज्यादा धन को महत्व देना, आदर्श के बजाय दिखावा प्रवृत्ति का ज्यादा होना जैसे पक्ष समज मे शिक्षा एवं शिक्षक की गिरती स्थिति के लिए उत्तर दायी है।

मुंबई मे कक्षा 2 की छात्रा से शिक्षक द्वारा शोषण की घटनाएँ मानव समाज पर न धुलने वाला सबसे बड़े दाग है। 2– शिक्षा प्रशिक्षण एवं प्रशासन का निम्न स्तर– वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुशल शिक्षक से ज्यादा डिग्री धारी बनाते है तो 1 से 2 लाख रुपये मे निजी संस्थानो द्वारा मिलने वाले प्रशिक्षण प्रमाणपत्र, सरकार द्वारा शिक्षक चुनाव न्युक्ति प्रक्रिया में पारदर्शिता का अभाव एवं भ्रष्टाचार, अकुशल लोगो को भी नीतियों का फायदा देते हुए न्युक्ति, न्युक्ति परीक्षा का स्तरीय न होना एवं भर्ती परिक्षण मे नैतिकता एवं मानसिक पुष्टता के बजाय केवल विषय ज्ञान या अंक को ही महत्व देना आदि के प्रभाव कहीं न कहीं शिक्षक एवं शिक्षण के गिरते स्तर के लिए उत्तरदायी है। आज मध्यावधि शिक्षक प्रशिक्षण एक खानापूर्ति बनकर रह जा रही है वहीं कई शिक्षा

प्रशासक अपने को शिक्षक के बजाय प्रशासक समझने में ज्यादा गौरव महसूस करते है. उनमें अब त्याग एवं परमार्थ की भावना का अभाव पाया जाता है परिणांतः सही शिक्षा का विकास नहीं हो पाता. आज का शिक्षको पर न तो लोग भरोसा करते है और न ही आदर्श शिक्षा को भी सम्मान देते है। समाज, शिक्षक को बहुत अच्छे नजर से नहीं देखता है।

आज शिक्षक एक गुरु नहीं वरन सुविधाप्रदाता हो गया है जो अपने शिष्य से पुत्रवत भावनात्मक लगाव नहीं रख पाता और आए दिन इसके वीभत्स परिणाम दिखाई देते हैं । समाज भी धनी को महत्व देता है चाहे वह गलत ही क्यों न हो। समाज गलत का स्वस्थ विरोध नहीं करता है जिससे स्वार्थपरता एवं मूल्यहीनता को बढ़ावा मिलता है।

6.11– वर्तमान शिक्षा व्यवस्था एवं मूल्य ह्रास आज मानव अपने जीवन को अधिक सुविधाप्रद बनाने का नित्य नवीन प्रयास कर रहा है परंतु आए दिन मानव मूल्यों के क्षय के उदाहरण इस बात को स सोचने पर मजबूर कर देते है कि प्राचीन काल में कम सुविधाओं के बावजूद आज् से कहीं ज्यादा मूल्ययुक्त था समाज। शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों मूल्य युक्त थे तभी चाणक्य जैसे गुरु ने एक गुलाम बालक को भी समाज सेवक तेन तक्त्येन भुजींथा से युक्त प्रजापालक सम्राट बना दिया था पर आज देश का सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी भी जब सेवा कार्य में आता है तो उसकी कमीज मूल्यहीन धब्बो से ढकी दिखने लगती है जो बड़ा सोचनीय विषय है।

इसी सन्दर्भ में अध्यन में कुछ चयनित विन्दुओं पर वर्तमान स्थिति के सन्दर्भ में मंताव्यता ली गयी. तालिका 11 के अनुसार 68.67% लोगों के अनुसार शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध में गिरावट आ रही है, 53.33 % के अनुसार छात्रों का माता–पिता से वयवहार पुष्ट नहीं है एवं गिरावट आ रही है, 59. 33% के अनुसार सच बोलने में विश्वास नहीं करते, 59.67% के अनुसार स्त्री सम्मान में विश्वास नहीं करते , 61.33% के अनुसार छातत्रों में देशभक्ति में रूचि कम है, 54.00% के अनुसार छात्रों में धार्मिक विचारो में विश्वास कम हो रहा है. 61.33% के अनुसार वर्तमान में छात्रों में कमजोर को सहता देने की प्रवृत्ति कम हो रही है, 54.67% के अनुसार छात्रों में गलत का विरोध करने की प्रवृत्ति कम हो रही अर्थात अवसरवादिता की स्थिति बढ़ रही है। अर्थात लगभग 60% लोगों का मानना है कि छात्रों में सतत मूल्य परक पक्षों सम्बन्धी विचारों में कमी आ रही है।

आज मूल्यों में हो रहे ह्राश के कारणों में कुत्सित भौतिकता को जीवन का अंग बनाना, अवसरवादी दृष्टिकोण, भौतिकसुख, साम्प्रदायिकता, जातिवाद एवं क्षेत्रवाद जैसे सामाजिक कारण आदि मुख्य है आज का भारतीय सहनाववतु सह्नौभुन्क्तु के आदर्शों को छोड़ एक दूसरे का शोषण

एवं नीचा दिखने की प्रवृत्ति में फसता जा रहा है। मूल्यह्रास को रोकने के लिए आवश्यक है की हम मानव बनाए मानवरुपी मशीन नहीं। एक शिक्षक या अविभावक के रूप मे हमे देखना है कि हमारे पाल्य मानवता को सँजोये एवं स्वस्थ प्रीतियोगिता द्वारा विकास करें वे स्वार्थी, शोषक न बने। विद्यालयी व्यवस्था के सभी पक्षों के माध्यम से इतना गहन शिक्षण दिया जाए की छात्रों में मूल्यों स्वस्थ विचार स्थापित हो. हम इस मामले में बहुत धनी है की हमारी सांस्कृतिक विरासत मूल्य शिक्षा की खान है जरुरत है की हम इन मूल्यों को विद्यार्थियों एवं समाज में स्थापित कर पाये और यह तभी संभव है जब समाज के शिक्षक स्वयं मूल्यवान हो तथा समाज मूल्यों को महत्व दे, हम उस उगते सूरज को सलाम न करे जो कीचड़ में सना हो बल्कि मूल्यवान को महत्व दे ताकि विकसित समाज स्वस्थ हो।

स्वतंत्र भारत में शिक्षा से संबन्धित सभी आयोगों, सभी पंथ सम्प्रदायों एवं महापुरूषों ने इसकी आवश्यकता को रेखांकित किया है। सभी संकायो में प्रारंभ में उन संकाय की दृष्टि से शिक्षा प्राप्त करने के पीछे का राष्ट्रीय एवं सामाजिक दृष्टिकोण छात्रों के समक्ष आना चाहिए। व्यवहारिक ज्ञान हेतु कार्यक्रमों की योजना भी छात्रों के स्तर के अनुसार आवश्यक है। जीवनमूल्यों की शिक्षा प्रदान करना, प्रार्थना सभा में योग एवं ध्यान द्वारा छात्रों की सुपर एनर्जी को चेनेलाईज करना।

सामाजिक कार्य का पाठयक्रम हो, एन सी सी एवं एन एस एस जैसे कार्यक्रमों, सांस्कृतिक धरोहर तथा प्राचीन ज्ञान विज्ञानं की जानकारी आदि की अनिवार्य किया जाना चाहिये। सभी धर्मग्रंथों की मूल बातों को संगृहीत करके एवं प्रमुख विचारकों की बातों एवं पक्षों को संकलित करके अनिवार्यता नैतिक शिक्षा का एक विषय हो या हर विषय की पाठयचर्या में ही इसको स्थान हर स्तर पर होना चाहिए क्योंकि जितना जरूरी खेल शिक्षा है उतना ही नैतिक शिक्षा।

छात्रो को नैतिकता, मेंहनत, समानता, स्वतन्त्रता, न्याय, बंधुता, सत्यता, वीरता एवं सतत प्रयास, सामाजिक–सांस्कृतिक समरसता आदि पक्षों के प्रेरक प्रसंगो से छात्रों को अभिप्रेरित किया जाए और उनके सकारात्मक पक्षों को सतत सराहा जाए ताकि छात्रो के साथ देश का तीब्र विकास हो निष्पादन स्तर उच्च हो सकता है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

तालिका सं 11- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था एवं मूल्य ह्रास सम्बन्धी अवधारणा (प्रतिशत में)

क्रसं	शिक्षा व्यवस्था एवं मूल्य ह्रास सम्बन्धी पक्ष	छात्र		शिक्षक		अविभावक व अन्य		कुल	
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
1	शिक्षक शिक्षार्थी संबंध	66.00	24.00	76.00	31.00	69.00	31.33	68.67	31.33
2	माता-पिता से वयवहार	50.67	64.00	36.00	34.00	66.00	46.67	53.33	46.67
3	सच बोलना	56.00	48.00	52.00	32.00	68.00	40.67	59.33	40.67
4	स्त्री सम्मान	62.67	52.00	48.00	39.00	61.00	40.33	59.67	40.33
5	देशभक्ति में रूचि	48.00	42.00	58.00	17.00	83.00	38.67	61.33	38.67
6	धार्मिक विचारोमें विश्वास	49.33	64.00	36.00	30.00	70.00	46.00	54.00	46.00
7.	कमजोर को सहयता देना	62.67	48.00	52.00	32.00	68.00	37.33	62.67	37.33
8	गलत का विरोध	39.33	52.00	48.00	19.00	81.00	45.33	54.67	45.33
	औसत	54.33	49.25	50.75	29.25	70.75	40.79	59.21	40.79

श्रोत- स्वसेर्वेक्षण व परीक्षण 2019

7—

निष्कर्ष एवं सुझाव— उपरोक्त अध्ययन एवं विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था समाज पर प्रभावी भूमिका नहीं अदा कर पा रहा आज एक तरफ हम अन्तरिक्ष में स्थान बना रहे है तो दूसरी तरफ समाज मूल्यह्रास के वीभत्स रूप से ग्रस्त हो रहा है।

समाज में शिक्षा के प्रत्येक पक्ष से असंतुष्टि दिखाई दे रही है। जहां तक छात्रों में मूल्यो के विकास का प्रश्न है उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मूल्यों के संवर्धन एवं उच्च शैक्षिक उपलब्धि में अभिप्रेरणा कि अहम भूमिका होती है। लेकिन एक शिक्षक किसी छात्र में तभी मूल्यसंवर्धन कर सकता है जब वह छात्रों से सकारात्मक रूप, से भावनाओ से जुड़े। छात्रों को प्रतिदिन घटनाओं एवं कहानियों के माध्यम से कुछ मूल्य संबन्धित बातें बताएं एवं अपने आदर्शों, व्यवहारों से छात्रों को पुष्ट करने का प्रयास करे। हालांकि उपरोक्त कार्य कठिन है परंतु संसार में अपनी प्रतिष्ठा एवं अपनी भूमिका को स्थापित करने हेतु हमें खुद को मजबूत और त्यागी बनाना ही होगा।

नई शिक्षा नीति में सरकार को शिक्षा के उद्देश्यों को पुनः परिभाषित करना होगा एवं तदनुसार पाठ्यक्रम को निर्धारित करना होगा जिसमें माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र का विस्तार जरूरी है इसी स्तर पर हमें क्षत्र को अपने पैर पर खड़े होने लायक बनानाहोगा. शिक्षक को सर्वगिर्ण दृष्टि से पुष्ट करना होगा. शिक्षकों के प्रशिक्षण को अधिक विस्तृत एवं सर्वांगीर्ण बनाना होगा वही सुविधाओं का विस्तार करना होगा। शिक्षण तकनीक को आधुनिक यंत्रों से सुसज्जित करना होगा। मूल्यांकन प्रणाली को अधिक व्यवस्थित एवं विश्वसनीय बनाना होगा। शिक्षक न्युक्ति प्रक्रिया स्वच्छ एवं गुणवत्तापूर्ण बनाना होगा। जहाँ निजी क्षेत्र की सीमायें परिभाषित करनी होगीं वहीँ सरकारी क्षेत्र के

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

लक्ष्य निर्धारित करने होंगे। अब समय है कि शिक्षा के अधिकार के बजाय सरकार गुणवत्तापूर्ण तकनीक युक्त निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के बारे में सोचे। नयी शिक्षानीति निश्चित तौर पर शिक्षा की वर्तमान कमियों को दूर करने में प्रभावी भूमिका अदा करेंगी।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

8– संदर्भ सूची

- टलस्टोय,एल (1998)– शिक्षा के प्रयोग, जनवाणी प्रकाशन दिल्ली ।
- किरण,चाँद)2003)– शिक्षा, समाज एवं विकास, कनिष्क प्रकाशन नई दिल्ली।
- हंसा, के यस (2003)–शिक्षा का लक्ष्य, न्यू बूक सोसाइटी नई दिल्ली।
- त्रिपाठी के (2004)– माध्यमिक विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा पर शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका जनवरी– जून 2004।
- चंडोला आर पी (2005) पर्यावरण– आज का भारतीय परिदृश्य, सुयोग्य प्रकाशन नई दिल्ली।
- फ्रायड,यस (2009), मनोविश्लेषण, राजपालएंड संस दिल्ली।
- दुबे बी (2011)– विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का प्रभाव, भारतीय आधुनिक शिक्षा जनवरी 2011।
- शर्मा आर (2012)– शिक्षा तकनीकी के तत्व एवं प्रबंधन, राज प्रिंटर्स मेरठ।
- नयी शिक्षा नीति (1986)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005)
- नयी शिक्षा नीति (क्तंजि) (2016)